

होय निःशल्य तजो सब दुविधा, आतमराम सुध्यावो।  
जब परगति को करहु पयानो, परम तत्त्व उर लावो॥  
मोहजाल को काट पियारे, अपनो रूप विचारो।  
मृत्यु मित्र उपकारी तेरो, यों निश्चय उर धारो॥५३॥

(दोहा)

मृत्यु महोत्सव पाठ को, पढ़ो सुनो बुधिवान।  
सरधा धर नित सुख लहो, 'सूरचन्द' शिवथान॥  
पंच उभय नव एक नभ, सम्बत् सो सुखदाय।  
आश्विन श्यामा सप्तमी, कह्यो पाठ मन लाय॥५४॥

### श्री सिद्धचक्र माहात्म्य

श्री सिद्धचक्र गुणगान करो मन आन भाव से प्राणी,  
कर सिद्धों की अगवानी॥टेक॥  
सिद्धों का सुमन करने से, उनके अनुशीलन चिन्तन से,  
प्रकटै शुद्धात्मप्रकाश, महा सुखदानी ऽ ऽ ऽ  
पाओगे शिव रजधानी ॥श्री सिद्धचक्र. ॥१॥  
श्रीपाल तत्त्वश्रद्धानी थे, वे स्व-पर भेदविज्ञानी थे,  
निज-देह-नेह को त्याग, भक्ति उर आनी ऽ ऽ ऽ  
हो गई पाप की हानि ॥श्री सिद्धचक्र. ॥२॥  
मैना भी आतमज्ञानी थी, जिनशासन की श्रद्धानी थी,  
अशुभभाव से बचने को, जिनवर की पूजन ठानी ऽ ऽ ऽ  
कर जिनवर की अगवानी॥श्री सिद्धचक्र. ॥३॥  
भव-भोग छोड़ योगीश भये, श्रीपाल ध्यान धरि मोक्ष गये,  
दूजे भव मैना पावे शिव रजधानी ऽ ऽ ऽ  
केवल रह गयी कहानी ॥श्री सिद्धचक्र. ॥४॥  
प्रभु दर्शन-अर्चन-वन्दन से, मिटता है मोह-तिमिर मन से,  
निज शुद्ध-स्वरूप समझने का, अवसर मिलता भवि प्राणी ऽ ऽ ऽ  
पाते निज निधि विसरानी॥श्री सिद्धचक्र. ॥५॥  
भक्ति से उर हर्षाया है, उत्सव युत पाठ रचाया है,  
जब हरष हिये न समाया, तो फिर नृत्य करन की ठानी ऽ ऽ ऽ  
जिनवर भक्ति सुखदानी ॥श्री सिद्धचक्र. ॥६॥  
सब सिद्धचक्र का जाप जपो, उन ही का मन में ध्यान धरो,  
नहिं रहे पाप की मन में नाम निशानी ऽ ऽ ऽ  
बन जाओ शिवपथ गामी ॥श्री सिद्धचक्र. ॥७॥  
जो भक्ति करे मन-वच-तन से, वह छूट जाये भव-बंधन से,  
भविजन! भज लो भगवान, भगति उर आनी ऽ ऽ ऽ  
मिट जैहै दुखद कहानी ॥श्री सिद्धचक्र. ॥८॥